डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 4 नवम्बर 2008 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - छठा | अंक-सातवां | नवम्बर-2008 | मासिक पत्रिका

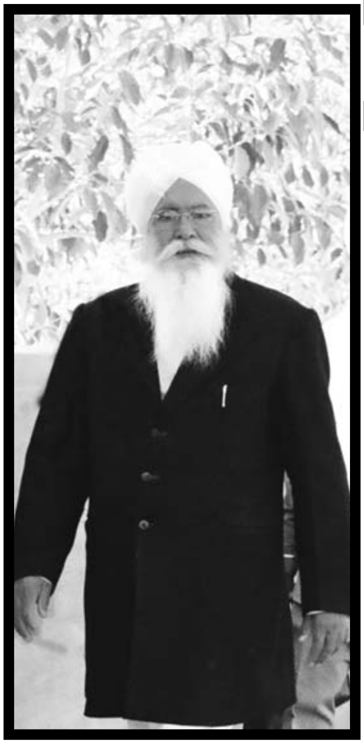

धन्य अजायब 4
मुम्बई में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

दर्शन 5
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा सवालों के जवाब
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

हरि बिन कौन तुम्हारो मीता 9
महात्मा चरनदास जी की बानी
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
रोहतक

प्रेम-विरह 27
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अनमोल वचन
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 से प्रकाशित किया ।**
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** उप सम्पादिका : **नंदिनी**
सहयोग : **रेणु सचदेवा, रोज़ी आनन्द व परमजीत सिंह**

सन्त बानी आश्रम
80
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

धन्य अजायब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 7 से 11 जनवरी 2009 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी प्रेमी सतसंगी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि नीचे दिए पते पर पहुँचकर लाभ उठाएं।

आरोग्य भूरा भाई भवन,

शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा)

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई - 400 067

फोन - 022-2496 5000, 93246 51 321

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाल

दर्शन

साँपला (हरियाणा)

प्रश्न : *प्यारे महाराज जी! भजन पढ़कर गाना बेहतर है या उस समय* ***दर्शन*** *करना बेहतर है क्योंकि दोनों ही जरूरी हैं? जिन्हें भजन याद नहीं वे तो किताब में से पढ़कर ही गाते हैं।*

उत्तर : हाँ भई! हमने बोलना जुबान से है और **दर्शन** आंखों से करने हैं। महाराज सावन सिंह जी दर्शनों की महानता के बारे में बताया करते थे कि ज्यादा लाभ दर्शनों का है क्योंकि परमात्मा सर्वव्यापक, अलख और अगम है। हम उससे मिल नहीं सकते। इंसान की इस कमजोरी को देखकर ही परमात्मा इंसानी जामें में आता है।

महाराज कृपाल ने मुझे जातिय तौर बताया था कि एक बार आप और डा. जॉनसन महाराज सावन की टांगे दबा रहे थे। आपने महाराज सावन से पूछा, ''अंदर किस तरह का **दर्शन** होगा?'' महाराज जी ने कहा, ''अंदर ऐसे ही नक्श होंगे जो आप अभी देख रहे हैं।''

जिन प्रेमियों का **दर्शन** पक चुका है वे कहते हैं, ''गुरु आ गया है।'' अगर उनको गुरु दिखता है तभी वे ऐसा कहते हैं। बाहर का चेहरा इतना आकर्षक नहीं होता, अंदर का सूक्ष्म चेहरा बहुत तेज वाला होता है वह चुम्बक की तरह खींचता है। जैसे-जैसे शिष्य अंदर जाता है नूरी चेहरा सूक्ष्म से भी सुंदर है। गुरु की नजर आत्मा पर होती है। गुरु अभूल ताकत है जिसे 'नाम' देता है उसे कभी नहीं भूलता।

काल सतगुरु की आत्मा को अंगीकार नहीं करता अगर कर भी ले! सन्त नर्क में जाकर अपनी आत्मा को ढूंढ़ लेते हैं अगर शिष्य की कोई निशानी नहीं होगी तो गुरु उसे कैसे जाकर ढूंढेगा? अगर सेवक का ध्यान पका नहीं होगा तो वह गुरु के साथ कैसे आएगा, उसे कैसे

यकीन होगा कि यह मेरा गुरु है; इसने ही मुझे 'नाम' दिया है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

गुरु का ध्यान धर प्यारे, बिना गुरु के नहीं छूटना।

गुरु हमें जो मंत्र देता है उसे जपें। इस मंत्र के आगे काल की ताकत नहीं ठहर सकती। गुरु के स्वरूप का ध्यान तीसरे तिल पर लाएं। गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं:

अकाल मूर्त है साध सन्तन की, ठहरने की ध्यान को।

प्यारेयो! गुरु का स्वरूप काल के दायरे के पार से आता है। दुनिया का ध्यान तो बिना सोचे ही बन जाता है। गुरु का ध्यान तीसरे तिल से नीचे नहीं बनता। हम एकाग्र नहीं होते इसलिए जुड़ नहीं पाते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सतसंगी को उस जगह बैठना चाहिए जहां से वह आसानी से गुरु के **दर्शन** करता रहे। जो पहले आता है वह आगे बैठे। हमें कभी भी दूसरे को उठाकर आगे बैठने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।'' आगे बैठने के लिए हम महाराज सावन के आने से पांच-छह घंटे पहले आकर बैठा करते थे।

महाराज सावन सिंह जी का उपदेश बहुत सादा होता था। आप दो लफ़्ज़ों में ही सारी बात समझा देते थे। आप कहा करते थे, ''जट्ट की नज़र पीछे की क्यारी पर होती है। सतसंग ध्यान लगाने का बहुत अच्छा मौका है। सतसंग के समय आपकी निगाह पाठी की तरफ भी नहीं जानी चाहिए।'' कबीर साहब कहते हैं:

साधु का निरख आंख और माथा, सत का नूर रहे तिस साथा।

जो लोग सतसंग में टिकटिकी लगाकर बैठते हैं, वे बहुत कुछ देखते हैं उन्हें अच्छे तर्जुबे भी होते हैं। इसलिए आप भजन बोलने की प्रेक्टिस पहले कर लें ताकि किताब का ज्यादा सहारा न लेना पड़े। किताब आगे रखकर थोड़ा सा ही किताब की तरफ देखें और निगाह दर्शनों पर ही रखें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे:

हथ कार वन्नी दिल यार वन्नी।

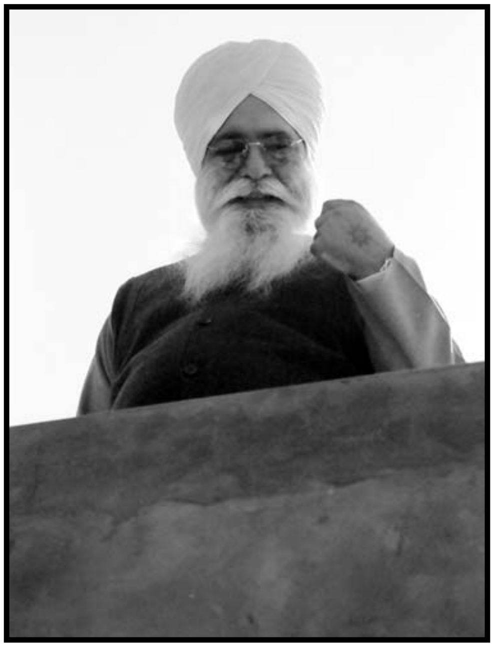

हाँ भई! प्रेमियों के सवाल बहुत अच्छे थे। परमात्मा सावन-कृपाल को याद करके दिल बहुत खुश हुआ। मैं ज्यादातर आपबीती सादे लफ़्ज़ों में ही बताया करता हूं।

महाराज सावन सिंह जी हमेशा कहा करते थे कि जिसने दो लफ़्ज़ों में बात समझनी है वह मेरे पास आए और जिसने ज्यादा लफ़्ज़ों में समझना है वह कृपाल सिंह के पास जाए। आप कहते, ''कृपाल सिंह पहले गन को खोलता है फिर जोड़ता है।''

मुझे उन दोनों महापुरुषों के चरणों में बैठकर जो प्यार मिला मैं वही आपके साथ बाँट रहा हूं। मेरे दिल और दिमाग में उनकी बहुत याद भरी हुई है। जैसे खींचने से स्प्रिंग तन जाता है और ढ़ीला छोड़ने से अपनी जगह वापिस आ जाता है इसी तरह मैं जब भी उनकी बात करता हूं तो मुझे बहुत शान्ति और आराम मिलता है। उनके संपर्क में बैठकर जो बातें हुई उनको याद करके मैं आपको बताता हूं।

महाराज सावन सिंह जी महाराज कृपाल सिंह जी को ज्यादातर बाऊजी या मौलवी कहा करते थे। सिकन्दरपुर का वाक्या है शादी होनी थी और महाराज कृपाल सिंह जी का इंतजार हो रहा था। महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''हमारे मौलवी को तो आ जाने दो।'' मौलवी ज्यादा पढ़ा-लिखा होता है।

☆☆☆

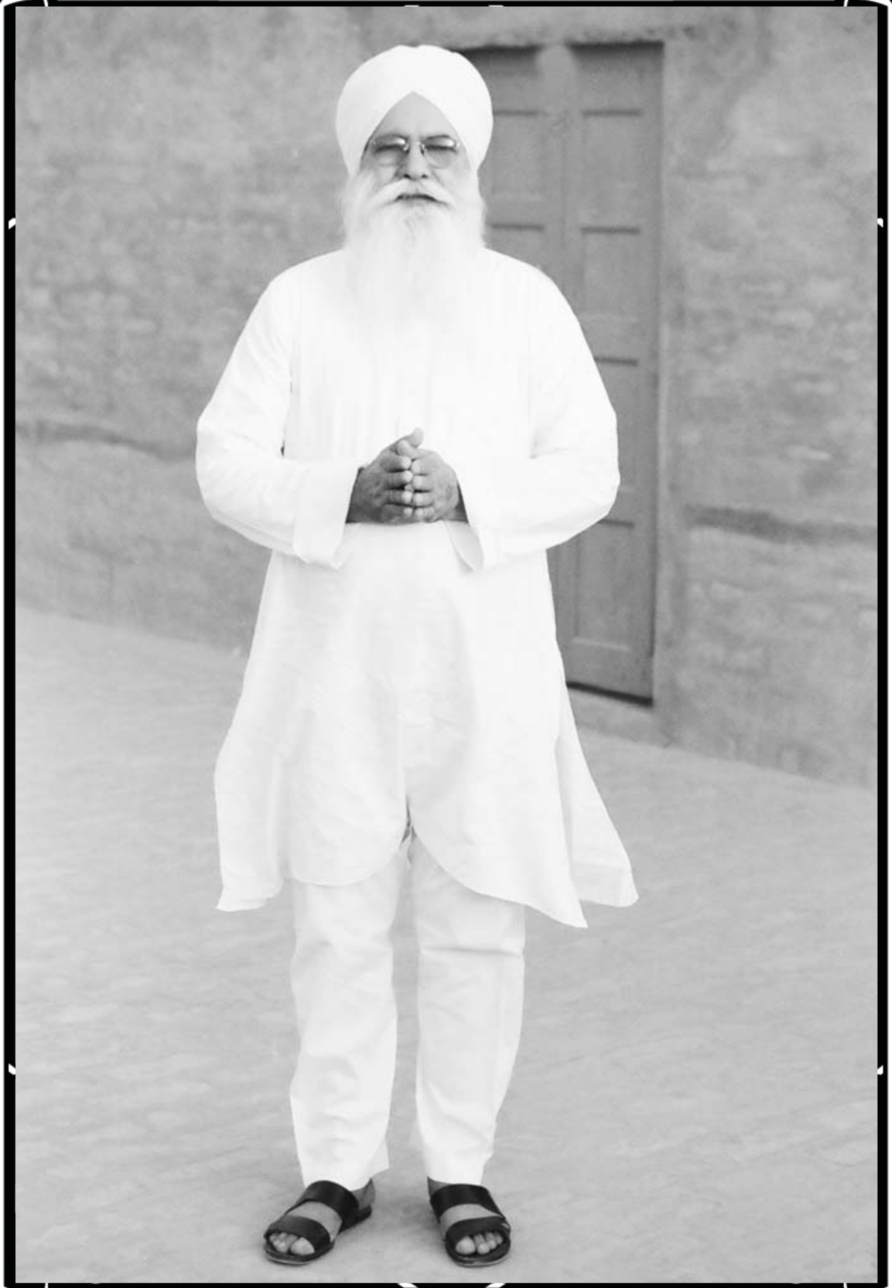

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

हरि बिन कौन तुम्हारो मीता

महात्मा चरनदास जी की बानी

रोहतक (हरियाणा)

परम पिता सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर रहम किया अपनी भक्ति का दान दिया और अपना यश करने का मौका दिया। यह सब सावन-कृपाल की दया है जो आज हम उनकी याद में बैठे हैं।

हम जानते हैं कि आजकल ख्याल कितने फैल चुके हैं। हर इंसान जिंदगी में शुरु से लेकर आखिर तक मारो-मार करता चला जाता है लेकिन किसी को भी यह चिंता नहीं की कि इस छोटी सी जिंदगी के बाद हमें कहाँ जाना है, क्या करना है? यह उस महान गुरु कृपाल की दया है जिसने हमें यह सोचने पर मजबूर किया कि आप इस जिंदगी में बैठकर वह काम करें जो आखिर समय में हमारे काम आएगा।

प्यारेयो! सन्त-महात्मा चाहे किसी युग, किसी मुल्क या किसी समाज में आए बेशक उनकी भाषा अलग-अलग रही लेकिन सबका Target एक ही है। सभी सन्त हमें यही बताते हैं कि परमात्मा एक है। परमात्मा से मिलने का तरीका भी एक है।

गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब और मौलाना रुम ने परमात्मा से मिलने का एक ही तरीका बताया है। यह इस तरह है जैसे एक महात्मा पौधा लगाकर जाता है और दूसरा महात्मा उसे पानी देकर हरा-भरा कर देता है। सन्त-महात्मा का मिशन किसी ग्रन्थ या पुस्तक के सहारे नहीं होता। पुस्तक पढ़कर वे हमें यह बताना चाहते हैं कि हम आपको कोई नई बात नहीं बता रहे हैं।

बाबा बिशनदास जी बड़े प्यार से एक कहानी सुनाया करते थे कि एक बहुत ही सुहावना नगर था, उस नगर के लोग भी बहुत खुशहाल

थे। वे लोग हर साल एक नया राजा चुनते और राजा की आज्ञा का पालन बहुत अच्छी तरह से करते थे लेकिन एक साल के बाद उस राजा को जंगल में छोड़ आते थे बेशक जंगल में उसे शेर, कुत्ता-बिल्ला या कोई भी जानवर खा जाए! वे सब वहाँ हड्डियों का ढेर हो जाते थे।

इसी तरह उन्होंने एक बहुत समझदार राजा चुना। वह राजा विवेक-बुद्धि वाला था उसने सोचा! मुझे यह राज्य एक साल के लिए मिला है प्रजा मेरा कहना मानती है; मैं वह काम करूँ जो एक साल के बाद मेरे काम आए ताकि मैं एक साल के बाद अपनी अच्छी जिंदगी बिता सकूँ। राजा ने जंगल का अच्छी तरह से मुआएना किया। जंगल में सफाई करवाई, वहाँ एक बहुत अच्छा आलीशान महल बनवाया। उस महल में अच्छा फर्नीचर और खाने-पीने का सामान भिजवा दिया और उस महल को अपने एक प्यारे मित्र के नाम करवा दिया। एक साल बाद वे लोग राजा को जंगल में छोड़ आए। इस राजा ने सब इन्तजाम पहले से ही किया हुआ था इसलिए वह अपनी जिंदगी सुख से बिताने लगा।

यह तो एक कहानी है। हमने इस कहानी से यह शिक्षा लेनी है कि परमात्मा ने हमें यह इंसानी जामा एक मौका दिया है। यहाँ मन राजा है और इन्द्रियाँ प्रजा हैं। इन्द्रियाँ मन का हुक्म मानती हैं मन जो भी कहता है इन्द्रियाँ वही करके दिखाती हैं। हम जानते हैं कि जब आखिरी समय आता है तो हमारे रिश्तेदार हमें शमशान में छोड़कर चले आते हैं या मिट्टी के सुपुर्द कर देते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

जब जलिए तब होए भस्म तन, रहे किरम दल खाई।
कच्ची गागर नीर परत है, यही तन की वड़ियाई।।

अगर आग के सुपुर्द कर दिया जाता है तो राख बन जाती है मिट्टी में दबा दिया जाता है तो उसे कीड़े खा जाते हैं। हमारी देह भी कच्चे घड़े की तरह है जिसमें पानी नहीं ठहरता। बिमारियाँ शरीर को खराब कर देती है। बुढ़ापा बिमारियों का घर है। हमें यह एक मौका मिला है। समझदार जिंदगी में वह काम करते हैं जो जिंदगी के बाद काम आए।

हमें इंसानी जामा एक मौका मिला है। इसमें बैठकर हम वह काम करें जो आखिरी समय में हमारे काम आए। जिसने हमें 'नाम' दिया है उसने हमारी जिम्मेवारी ली है। हम 'शब्द-नाम' की कमाई करके जो भी पूँजी कमाते हैं हमारा गुरु उसे इकट्ठा करके रखता है। जो बच्चा अपने पिता के कहे अनुसार चलता है पिता उसका हक़ नहीं रखता बल्कि अपनी कमाई भी उसके हवाले कर देता है, पिता जानता है कि यह बच्चा समझदार है।

आखिरी समय माता-पिता, बहन-भाई और किसी समाज ने हमारी मदद नहीं करनी। गुरमेल सिंह ने अभी शब्द बोला कि नौकर-चाकर, कारें या तिजोरी में जो माया है यहाँ का सब सामान हमने यहीं छोड़ जाना है। सगे-सम्बंधी जो प्यार का दम भरते है, हमारे ऊपर जान वारते हैं, जोश से हमारा स्वागत करते हैं वही हमें अग्नि के हवाले कर आते हैं। मुर्दे को कौन घर में रखता है? सब यही कहते हैं इसे जल्दी से जल्दी ठिकाने लगाया जाए।

हमारा सज्जन कौन है? सतगुरु ही सज्जन है जो आखिर तक हमारे साथ चलता है। सन्त-महात्मा न तो कोई कौम बनाने के लिए आते हैं और न ही तोड़ने के लिए आते हैं। वे प्यार से समझाते हैं कि आप लोग अपने-अपने समाजों में रहें, अपने-अपने रीति-रिवाज़ करें। हमने अपनी आत्मा को प्रभु के साथ जोड़ना है, जिसे हम अपने आप नहीं जोड़ सकते। गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं:

काहे रे वन खोजन जाई, सर्व निवासी सदा अलेपा तो ही संग समाही।
पोहप मध ज्यों वास वसत है मुक्कर में जैसे स्याही।
तैसे ही हरि वसे निरंतर, घट ही खोजो भाई।
बाहर भीतर एको जाने ऐह गुरु ज्ञान बताई।
जन नानक बिन आपा चीन्हें मिटे न भ्रम की काई।।

आप दिल से यह ख्याल निकाल दें कि परमात्मा किसी स्वर्ण मंदिर या किसी बड़े पहाड़ पर बैठा है! वह परमात्मा हम सबके अंदर

इस तरह है जिस तरह फूल में खुशबु है, शीशे में रोशनी है, मेहंदी के पत्तों में रंग है, तिल के अंदर तेल है लेकिन युक्ति के बिना हम इन्हें प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है।'' जिसने जिंदगी में खुद किया होता है वही हमें बता सकता है। 'नाम' ले लेना ही काफी नहीं होता। अगर किसी ने तरस खाकर हम भूले-भटकों को हमारे शहर का रास्ता बता दिया फिर भी हम वहीं बैठे रहेंगे तो क्या अपनी मंजिल तय कर लेंगे? हम यह जरूर कहेंगे कि हमें रास्ता मालूम है। हम जितना यत्न करेंगे उतना ही मंजिल के नज़दीक होंगे। मंजिल तक पहुँचने के लिए सफर तो हमने खुद ही तय करना है।

सन्त-महात्मा ने हमें 'नाम' देकर अंदर जाने का तरीका बताकर कहते हैं, ''देख बेटा! यह तेरा रास्ता है। भटकता तू पहले भी रहा है अगर अब भी भटकेगा तो कुछ नहीं मिलेगा।'' सन्त-महात्मा यह नहीं कहते कि आप अंदर अकेले जाएं। सभी सन्त-महात्माओं ने नाम की महिमा गाई है कि 'नाम' के बिना मुक्ति नहीं। रामचन्द्र, कृष्ण ब्रह्म के अवतार हुए हैं। उन्होंने भी सतगुरु के चरणों में जाकर अपने गुरु के आश्रम में झाड़ू लगाने की सेवा की।

सन्त-महात्मा हमें उस देश का पता बताते हैं जहाँ ये आँखें, कान, हाथ-पैर नहीं जाते। वहाँ रूहानी आँखों से देखा जाता है और रूहानी कानों से सुना जाता है। सन्त हमें कल्पना ही नहीं करवाते वे कहते हैं खुद जाकर अपनी आँखों से देखें। कबीर साहब कहते हैं:

जब लग न देखूं अपनी नैनी, न पतीजूं गुरु की बैनी।

हम जानते हैं कि अध्यापक बच्चों को पढ़ाता है उनसे प्यार भी करता है लेकिन परीक्षा तो बच्चे ने खुद ही देनी है जो बच्चा अच्छी तरह पढ़ेगा वह टीचर की तवज्जो का हकदार होगा। यही बात सन्तमत में भी लागू होती है। जब हम 'नाम' ले लेते हैं उस समय सन्त हमें कुछ

परहेज़ बताते हैं कि मीट, शराब छोड़े। मर्द पराई स्त्री और स्त्री पराए पुरुष की तरफ से तौबा करें क्योंकि आज तक न तो कोई विषय-विकारों से संतुष्ट हुआ है और न हो ही सकता है।

सभी सन्तों ने सतसंग की महिमा गाई है। जहाँ कोई पूर्ण महात्मा सच से जुड़ा हो उसे सतसंग कहते हैं। जहाँ बीते समय के राजा-महाराजाओं की कहानियाँ सुनाई जाती हो। जहाँ एक समाज दूसरे समाज की निन्दा करता हो या हमारी जेब से पैसे निकालने के लिए भाषण दिए जाते हो उसे सतसंग नहीं कहते। सतगुरु के बिना नाम नहीं मिलता और सतसंग के बिना हमें हमारी गलतियों का पता नहीं चलता। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर 100-200 आदमी सड़क पर बाजा लेकर निकल पड़े लेकिन उनमें कोई दूल्हा न हो तो क्या वह बारात कहलवा सकती है?''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि दो प्रकार के आदमी ही हमें हमारी गलतियों के बारे में बता सकते हैं। हमारा विरोधी हमारे मुँह पर ही कह देगा कि तुम्हारे अंदर यह ऐब है आप उस पर गुस्सा न हों बल्कि उसका धन्यवाद करें, अगर आपमें ऐब नहीं तो आप चुप रहें।

सन्त-महात्मा हमें कहानी बनाकर हमारा ऐब बता देते हैं अगर हम उस ऐब को छोड़ेगे तो ही हमारी आत्मा साफ होगी। आत्मा और परमात्मा दोनों ही हमारे अंदर है अगर लोहा साफ है तो मेगनेट उसे पकड़ेगा अगर लोहे को जंग लगा हुआ है तो बेशक उसे आप मेगनेट के ऊपर रखें वह उसे नहीं पकड़ेगा। आपके आगे महात्मा चरनदास जी की बानी रखी जा रही है, ध्यान से सुनें:

हरि बिन कौन तुम्हारो मीता, हरि बिन कौन तुम्हारो मीता।।
कुटुंब संघाती स्वारथ लागे, तेरी काहूँ कँ नहिं चीता।।

महात्मा चरनदास जी प्यार से समझाते हैं कि हर एक की जिंदगी में वह दिन आता है अगर हिन्दु है तो अग्नि लगा देते हैं मुसलमान है

तो उसे मिट्टी में दबा देते हैं। यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा था, ''जिंदगी में सबसे अचरज बात क्या है? युधिष्ठिर ने जवाब दिया कि हम जिंदगी में अपने साथियों को मरते हुए देखते हैं और खुद ही उन्हें शमशान भूमि में कन्धा देकर छोड़कर आते हैं। वहाँ तिनका भी तोड़कर फेंक आते हैं कि अब तेरा हमारा कोई रिश्ता नहीं अगर मुसलमान है तो मिट्टी की मुट्ठी भरकर कब्र पर रख आते हैं कि अब तू हमें मिट्टी जैसा लगता है। हम ये सब अपनी आँखों से देखते हैं फिर भी सोचते हैं! शायद मौत इनके लिए है हमारे लिए नहीं, यही संसार की सबसे अचरज बात है।

महात्मा चरनदास जी प्यार से कहते हैं कि हम जिंदगी में यह भी देखते हैं कि जब किसी के पास चार पैसे होते हैं। वह जवान होता है किसी ऊँचे ओहदे पर होता है तो सब उसे अपना-अपना कहते हैं और उससे रिश्तेदारियाँ बना लेते हैं लेकिन जब उसके पास कुछ न हो तो सगे-संबन्धी भी उससे बात करके खुश नहीं होते।

आप कहते हैं, ''अन्त समय में किसी ने साथ नहीं जाना। सब अपनी-अपनी गर्ज की खातिर नज़दीक होते हैं। जब तक गर्ज पूरी होती है वाह-वाह करते हैं लेकिन बाद में कोई नहीं पूछता। हमारे रिश्तेदार चिंता नहीं करते कि यह कोई भजन-सिमरन कर ले।''

तैं प्रभु ओरी सूँ मुख मोड़ा, झूँठे लोगन सूँ हित कीता।।

आप कहते हैं कि जिस प्रभु ने हमें संसार देखने के लिए आँखें दी हैं। खाना खाने के लिए हाथ दिए हैं और कितने ही प्रकार का अन्न-पानी दिया है उसी प्रभु ने हमारे अंदर ऐसी शक्ति आत्मा भी रख दी है जिसके होने के कारण ही सब हमारे साथ प्यार करते हैं लेकिन हम उसी परमात्मा को भूल गए हैं।

जैसे कोई बच्चा नुमाईश देखने के लिए जाता है। वह वहाँ रखे हुए खिलौने और नई-नई चीज़ें देखकर बहुत खुश होता है अगर उस बच्चे की ऊँगली पिता के हाथ से छूट जाए तो वह बच्चा चीखे मारकर

रोने लगता है क्योंकि सामान में ख़ुशी और शान्ति नहीं। शान्ति तो पिता का हाथ पकड़ने में थी। इसी तरह अगर हम उस परमात्मा गुरु का हाथ पकड़ कर संसार में चलेंगे तो हम भी इस दुनिया में चार दिन सुख-शान्ति से बिता लेंगे। नहीं तो रोते आए हैं, रोते ही चले जाएंगे।

अरु तैं अपनी आँखों देखा, कई बार दुख सुख हो बीता।।

महात्मा चरनदास जी कहते हैं, ''हमने कई बार ख़ुद अपनी आँखों से देखा है कि जब दुख आता है तो अपने भी पराए हो जाते हैं। जब सुख आता है तो पराए भी अपने हो जाते हैं।''

सम्पति में सबहीं घिरि आवैं, बिपति परे अधिको दुख दीता।।
मूठी बाँधि जनम नर लायो, हाथ पसारि चलैगो रीता।।

आप कहते हैं, ''इंसान मुठ्ठी बंद करके जन्म लेता है और हाथ पसार कर चला जाता है। हम जिस शरीर का इतना मान करते हैं वह भी हमारे साथ नहीं जाता। यह शरीर एक किराए का मकान है।'' गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं:

राम गयो रावण गयो, जाको बोह परिवार।
कहो नानक थिर कछू नहीं, सुपने ज्यों संसार।।

राम और रावण जैसे बड़े-बड़े इस संसार में नहीं रहे। इस संसार की कोई भी चीज़ स्थिर नहीं है। हम धन का मान करते हैं, क्या गरीबों को सड़को पर पड़े हुए नहीं देखा? जवानी का मान हैं, बूढ़ों की तरफ देखें कैसा डरावना चेहरा हो जाता है? अच्छी सेहत का मान करते है? दो दिन बुखार चढ़ जाए तो चेहरा पीला पड़ जाता है। हुकूमत हाथ में आती है तो लाखों लोग गले में हार डालते हैं, वाह-वाह होती है तब दिल में ख्याल आता है कि हम कुछ हैं! जब दूसरी पार्टी का जोर पड़ जाता हैं तो वही लोग अखबारों में अपमान करना शुरू कर देते हैं। गोलियों का निशाना बना देते हैं। हम जिस हुकूमत को सुखों की सेज समझते थे वही दुखों का बिछौना बन जाती है।

महाराज जी मौहम्मद गौरी की मिसाल देकर समझाया करते थे कि उसने हिन्दुस्तान पर अठारह बार हमले किए, बहुत माल लूटा लेकिन जब उसका आखिरी समय आया तो उसने हुक्म दिया कि सारा माल बाहर सजाया जाए ताकि मैं उसे देख सकूँ। सामान देखकर वह बहुत रोया और उसने कहा, ''मैंने इस समान को इकट्ठा करने के लिए लाखों औरतें विधवा कर दी। लाखों बच्चे यतीम कर दिए लेकिन आज इसमें से कुछ भी मेरे साथ नहीं जा रहा। मेरे साथ जो होगा वह तो मैं भुगतुंगा ही, मेरे मरने के बाद मेरे हाथ बाहर कर देना ताकि दुनिया को यकीन हो जाए कि जब मौहम्मद गौरी संसार से गया तो उसके दोनों हाथ खाली थे।''

धरि धरि स्वाँग फिरै तिन कारन, कपि ज्यों नाचत ताता थीता।।

महात्मा चरनदास जी प्यार से समझाते हैं, ''जैसे बंदर अपने मालिक के डंडे से डरता हुआ नाचता फिरता है लेकिन हम अपने बच्चों और परिवार के लिए खुशी से कभी कहीं नौकरी करते हैं कभी कहीं रोजगार की तलाश में घूमते-फिरते हैं। रातों को नींद नहीं आती दवाईयाँ भी खाते हैं, सोचते हैं कहाँ से पैसा कमाया जाए?''

स्वान सामान करी गत अपनी, धन का सिमरन धन की जपनी।।

कुत्ते जैसी हालत हो जाती है। जागते हुए और सोते हुए भी धन के बारे में ही सोचते हैं फिर भी परमात्मा की तरफ नहीं आते।

मुए न संगी होहिं तिहारे, बाँधि जलावैं देह पलीता।।

जिनकी खातिर बंदर की तरह नाचते रहे वही सगे-संबन्धी मौत होने पर चिता पर रखकर अग्नि लगा देते हैं। कोई डाकुओं से घिरा हुआ हो! उसे कोई मदद करने वाला मिल जाए तो उसे कितनी खुशी होगी? इसी तरह अन्त समय में गुरु हमारी मदद करता है।

कचड़याँ स्यों तोड़, ढूँढ़ सज्जन सन्त पकयां।
ओह जिवंदेया विछड़े , मोया न जाईं छोड़।।

सन्तों ने बानियाँ हमें समझाने के लिए लिखी हैं ताकि हम सोए हुओं को होश आए। कबीर साहब कहते हैं:

यम का ठेंगा बुरा है, ओह नहीं सहा जाए।
एक जो साधु मोहे मिलया, तिन्हों लिया बचाए।।

आप कहते हैं कि वहाँ बहुत कष्ट है। मुझमें ताकत नहीं थी। मैं अंधा था मुझे जो साधु मिला था उसने मेरी अंगुली पकड़कर मुझे बचा लिया है।

गुरु सेवा सतसंग न कीन्हीं, कनक कामिनी सों करि प्रीता।।

हम न सतसंग में जाते हैं और न ही गुरु की सेवा करते हैं। सतसंग के लिए समय नहीं निकालते दुनिया की बातों में चाहे कितना भी समय लग जाए कुछ याद नहीं रहता। जिन्होंने हमारी मदद करनी है उनसे हमारा प्यार नहीं, लगाव नहीं।

चरनदास सुकदेव कहत हैं, मरत मरत हरि नाम न लीता।।

चरनदास जी कहते हैं, ''प्यारेयो! मेरे गुरु ने मुझे यह बात बताई है कि जीव मरता मर जाता है। जब उसका अन्त समय आता है तब हम उसे साधु-महात्मा के पास उठाकर ले जाते हैं कि यह बच जाए! उस समय हमारा फर्ज बनता है कि हम उससे कहें तू अपना ध्यान परमात्मा की तरफ लगा लेकिन कोई रहम नहीं करता।''

मैं एक बूढ़े की बात बताया करता हूँ कि उसे अधरंग हो गया, उससे चला नहीं जाता था। वह कई सालों से बिस्तर पर पड़ा हुआ था। उसके परिवार वाले उसे उठाकर मेरे पास ले आए कि शायद यह ठीक हो जाएगा! मैंने उससे कहा कि तू परमात्मा को याद कर। उसने मुझसे कहा, ''मैं इतना दुखी हूँ। मर रहा हूँ और तू कहता है कि परमात्मा को याद कर।'' गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं:

एक चित्त जो एक छिन ध्यावे, काल फांस के बीच न आवे।

उस समय तो हमारा फर्ज बनता है कि हम उससे कहें कि तू सिमरन कर अगर तुझे सिमरन याद नहीं तो मैं तुझे याद करवाता हूँ लेकिन उसकी चिंता कौन करता है?

करणी की गत और है, कथनी की और।
बिन करणी कथनी कथैं, बकवादी बोर।।

सब महात्माओं ने कथनी पर नहीं, करनी पर जोर दिया है। एक कमाई वाला महात्मा था। सन्त अपने आस-पास रहने वाले लोगों के दिलों की बात जानते हैं। वे बड़े गंभीर होकर इस संसार में रहते हैं। उस महात्मा का एक शिष्य था। महात्मा ने देखा कि मेरे इस शिष्य में बड़ा बनने की लालसा है। महात्मा ने उस शिष्य से कहा, ''तू रमता करके आ।'' लोग गुरु के नाम को मानते थे इसलिए उस शिष्य को मान देने लगे। उसके भी काफी शिष्य बन गए। उसके दिल में ख्याल आया! मैंने कमाई नहीं की फिर भी इतने लोग मुझे मानते हैं शायद मेरा गुरु भी ऐसा ही होगा?

काफी समय हो गया है महात्मा ने सोचा चलो! अपने शिष्य को देखकर आते हैं। महात्मा ने देखा कि उसके पास तो बहुत लोग बैठे थे। शिष्य के मन में अहंकार आया कि मेरे गुरु के पास तो कम लोग आते थे लेकिन मेरे पास तो लाखों लोग आते हैं। वह गुरु के आने पर खड़ा नहीं हुआ तो गुरु ने कहा, ''तू बड़ा अहंकारी हो गया है। तू नहीं जानता कि जो गुरु के आगे मान करता है, अपने दिल में गुरु की निन्दा लाता है उसे कुष्ठ रोग हो जाता है।'' कबीर साहब ने कहा हैः

जाके हृदय गुरु नहीं, सिख साखां की भूख।
ते नर ऐसे सूख सी, ज्यों जंगल विच रुख।।

गुरु हृदय में तभी होगा जब आप उसे प्रकट कर लेंगे। गुरु को प्रकट करना कोई खाला जी का वाड़ा नहीं अगर गुरु को प्रकट करने में एक जिंदगी भी लग जाए तो कम है। आप महात्मा की जिंदगी

पढ़कर देखें! गुरु नानकदेव जी ने पत्थरों को बिछोना किया, भूखे प्यासे रहे। ऊँचे भाग्य हों तो ही परमात्मा से बनती है।

पहले पाई बख्श दर, पिछो दे गुरु घाल कमाई।
भारी करी तपस्या, बड़े भाग हर स्यों बन आई।।

आप महाराज सावन-कृपाल की हिस्ट्री पढ़कर देखें! उन्होंने कितनी मेहनत की। आप मेहनत करेंगे तो ही आपके अंदर गुरु प्रकट होगा। रात-दिन सिमरन करें। भूख-प्यास काटें। नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आकर आत्मा से सारे पर्दे उतारकर पारब्रह्म से भी ऊपर चले जाएंगे। सचखण्ड पहुँचकर सतपुरुष से मिलाप करके सतपुरुष का रूप बन जाएंगे। तब गुरु हृदय में रहेगा और परछाई की तरह आपके साथ-साथ चलेगा। ऐसा शिष्य सोते-जागते गुरु-गुरु ही करता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

गुरु गुरु गुर कर मन मोर, गुरु बिना मैं नाहीं होर।

आज पब्लिसिटी का युग है जिन्होंने कमाई नहीं की होती वे गुरु बनने के लिए इश्तिहारबाजी करते हैं, करनी नहीं करते। वे दिन-रात इधर-उधर से कहानियाँ इकट्ठी करके सुनाते हैं। ज्यादा भीड़ इस बात का सबूत नहीं कि वहाँ कोई पूर्ण महात्मा है। कबीर साहब कहते हैंः

साखी लाया बनाएके, इत उत अक्षर काट।

वे खुद तो अंदर जाते नहीं अपने पीछे संगत को लगा लेते हैं पता नहीं काल उनका क्या करेगा? गुरु नानक साहब कहते हैंः

जोगी होए जग भवे, घर-घर भिखया ले।
दरगाह लेखा मंगिए, किस-किस उत्तर दे।।

सन्तों में यह सिफत होती है कि वे अपनी दस नाखूनों की कमाई से किरत करके अपना और अपने परिवार का गुजारा चलाते हैं। उसमें से प्रेमियों की सेवा भी करते हैं कि किसी का भला हो जाए। गुरु नानक साहब कहते हैंः

गुरु पीर सदाए मँगण जाए तां के मूल न लगी पाए।
घाल खाए कुछ हत्थों दे नानक राह पछाने से।।

अपने बड़े-बड़े महल बनवा लेते हैं। लोगों से कहते हैं कमाई करें और खुद कमाई नहीं करते। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

धन खींचे व्यापार बढ़ाए।

महात्मा चरनदास जी कहते हैं, ''कथनी कुछ और है करनी कुछ और है। करनी के बिना कथनी करना बकवास है। हम सारा दिन रोटी-रोटी करें तो क्या पेट भर जाएगा? क्या मिश्री-मिश्री कहने से मुँह मीठा हो जाएगा? इसी तरह क्या सारा दिन हरि-हरि करने से भक्ति हो जाएगी? हमने अंदर जाकर उस हरि से उस राम से मिलना है जो सबके अंदर रमा हुआ है।''

करणी बिन कथनी इसी, ज्यों शशि बिन रजनी।
बिन शस्तर ज्यों शूरमा, भूषण बिन सजनी।।

करनी के बिना कथनी ऐसे है जैसे चन्द्रमा के बिना रात शोभा नहीं देती, जैसे किसी औरत ने कपड़े न पहने हो तो वह भद्दी लगती है। शस्त्र के बिना सूरमा, सूँड के बिना हाथी, फल के बिना बाग और नाक के बिना इंसान शोभा नहीं देता। इसी तरह कमाई के बिना मालिक के दरबार में शोभा नहीं होती।

ज्यों पण्डित कथि कथि भले, वैराग सुनावै।
आप कुटुम्ब के फँद पड़े, नाहीं सुरझावै।।

जैसे पंड़ित, भाई, मौलवी लोगों को तो उपदेश सुनाते हैं लेकिन खुद परिवारों के मोह में फँसे होते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

कबीर ब्राह्मण की कथा, सौ चोरन की नाव।
सब अंधे मिल बैठयां, भावें बह ले जात।।

वहाँ सब सुभान-अल्लाह करने वाले ही बैठे होते हैं। खुद उन्होंने अपने कुटुंब का मोह नहीं छोड़ा होता और लोगों से कहते हैं कि तुम

वैराग्य करो; जब तक घर-बार नहीं छोड़ोगे कामयाब नहीं होंगे लेकिन सन्त प्यार से कहते हैं आप न अपना घर-बार छोड़ें, न बेटे-बेटियाँ छोड़ें। आपको जो कुछ भी कर्मों के हिसाब से मिला है इसमें प्यार से मिलकर रहें अपनी लिव परमात्मा से लगाकर रखें, भक्ति करें।

बाँझ झुलावै पालना, बालक नहिं माहीं।
वस्तु विहीना जानिये, जहाँ करणी नाहीं।।

अगर कोई औरत बच्चे के बिना झूले को झुलाए तो देखने वालो को अचरज होगा कि यह झूला किसे झुला रही है। गुरु नानकदेव जी ने अपनी बानी में बिना करनी वालों की एक कथा बताई हैः

एक बहुत होशियार जुलाहा था। उसने सोचा किसी तरीके से राजा से दोस्ती की जाए तो बहुत धन मिल जाएगा! उसने राजा के पास जाकर कहा, ''मुझे बहुत अच्छा कपड़ा बुनना आता है। मैं आपके लिए एक ऐसी पगड़ी बनाना चाहता हूँ जो कभी किसी ने न पहनी हो।'' राजा बहुत खुश हुआ उसने जुलाहे से पूछा कि तुझे कितने पैसे चाहिए? जुलाहे ने जितने पैसे माँगे राजा ने उसे उतने पैसे दे दिए। जुलाहा उन पैसों से ऐश करता रहा। इस तरह छह महीने बीत गए। एक दिन राजा ने सोचा कि जुलाहा अभी तक पगड़ी लेकर नहीं आया। राजा ने जुलाहे को अपने पास बुलवाया तो जुलाहे ने कहा कि मैं सूत तो ले आया हूँ लेकिन मुझे रंग के लिए और पैसे चाहिए। राजा ने उसे और पैसे दे दिए। इस तरह दो साल बीत गए। राजा ने उसे फिर बुलवाया। जुलाहे ने कहा मैं अभी ताना बुन रहा हूँ मुझे कुछ पैसे और चाहिए। इसी तरह काफी साल बीत गए। जुलाहा पैसे लेकर ऐश करता रहा।

जुलाहा एक दिन राजा के पास आकर कहने लगा, ''आपकी पगड़ी तो तैयार है लेकिन जो हराम का होगा उसे यह पगड़ी नजर नहीं आएगी जो हलाल का होगा यह पगड़ी उसी को नजर आएगी।'' राजा ने अपने वजीर को पगड़ी लाने के लिए भेजा। वजीर राजा की पगड़ी को थाल में रखकर जलूस की शक्ल में लाया लेकिन थाल में कोई पगड़ी

नहीं थी। अब अगर राजा कहे कि पगड़ी नहीं है तो वह हराम का बनता था इसलिए उसने कहा कि पगड़ी बहुत ही सुंदर है। इसी तरह वजीर ने भी कहा कि पगड़ी सुंदर है। राजा ऐसे ही इशारों से सिर पर पगड़ी बाँधने लगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नानक कूड़ा कत्या, कूड़ा तन्या तान।

वह जुलाहा ताना बुनना नहीं जानता था। वह झूठ बोलता था। कथनी करने वालों की यही हालत होती है। हम उनके पास जाते हैं तो वे हमें ऐसे ही झूठे लारे लगा देते हैं।

प्यारेयो! कथनी की नहीं करनी की जरूरत है अगर कोई आदमी नदी के बाहर खड़ा रहे तो क्या वह पार हो जाएगा? उसे नदी पार करने के लिए प्रेक्टिस करनी पड़ेगी, नाव चलानी सीखनी पड़ेगी। हम मेहनत के बिना खेती नहीं कर सकते, डॉक्टर या वकील नहीं बन सकते। दुनिया का कोई व्यापार मेहनत के बिना नहीं हो सकता तो क्या बिना मेहनत परमात्मा की भक्ति हो जाएगी?

बहुत से प्रेमी लोग बड़े जोश से 'नाम' ले लेते हैं फिर कहते हैं अभी समय नहीं आया, सतगुरु अपने आप नाम जपवा लेगा; सतगुरु ने ही पाप छुड़वाने हैं। कई लोग सतगुरु की, सतसंग की महिमा तो गाते हैं लेकिन जब मीट-शराब छोड़ने या मेहनत करके खाने का सवाल आता है तो इन लोगों का जोश ठंडा पड़ जाता है।

बहुडिंभी करणी बिना, कथि कथि करि मूये।
सन्तों कथि करणी करी, हरि की सम हूये।।

सन्तों ने परमात्मा रूप होकर करनी की होती है। आप कहते हैं:

सतपुरुष जिन जानेया, सतगुरु तिसका नाओ।
तिसके संग सिख उधरे, नानक हर गुण गाओ।।

जिस आदमी ने भौगोलिक विद्या पढ़ी है वह नक्शे पर अंगुली रखकर बता देगा कि यह कौन सा मुल्क है, कौन सा दरिया है और यह

नहर कहाँ तक जाती है? दूसरा आदमी जिसने ये सब जगाहें जाकर खुद देखी है वह भौगोलिक विद्या वाले से सच्चा है। इसी तरह सन्तों ने खुद अंदर जाकर सब कुछ देखा होता है।

कहैं गुरु शुकदेव जी, चरणदास विचारो।
करणी रहनी दृढ़ गहो, थोथी कथनी डारो।।

चरनदास जी के गुरु सुखदेव मुनि ने इन्हें कहा, ''देख प्यारे चरनदास! कथनी थोथी है किसी काम की नहीं क्योंकि इसमें रस नहीं होता रस तो गूदे में होता है। कथनी छिलका है करनी गूदा है।''

बीतेया वेला हथ न आवे, अजायब नू कृपाल समझावे।

प्यारेयो! बीता समय हाथ नहीं आता इसलिए करनी करें। परमात्मा हम सबके अंदर बैठा है। सन्त-महात्मा संसार में आकर सभी कौमों को अपना समझते हैं और सभी मुल्कों को अपना घर समझते हैं।

हिन्दू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना।
आपस में दोहू लड़त मरत है मर्म न दोहू जाना।।

सन्त हमें शब्दों के चक्कर में डालकर लड़वाते नहीं, कहते हैंः

होए एकत्र मिलो मेरे भाई।

आओ प्यारेयो! हम सब मिलकर बैठे दुविधा दूर करें और 'नाम' के साथ जुड़ें। जब हम सन्तों की युक्ति के मुताबिक अपने फैले हुए ख्यालों को तीसरे तिल पर एकाग्र करते हैं तो स्थूल, सूक्ष्म और कारण के सारे पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं वहाँ लिंग भेद खत्म हो जाता है। वहाँ पहुँचकर कोई यह नहीं कह सकता कि मैं हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख या ईसाई हूँ। वहाँ तो आत्मा ही आत्मा है। आत्मा उसी तत्व की बनी है जिस तत्व का परमात्मा बना हुआ है। आसमान पर एक ही सूरज है उसकी अनेकों किरणें जमीन से टकराकर धूप पैदा करती है। सूरज यह नहीं कहता कि मैंने इस समाज पर धूप देनी है

और उस समाज पर धूप नहीं देनी। कभी बादलों ने भी कहा है कि मैंने हिन्दुओं के घर बरसना है ईसाइओं के घर नहीं बरसना।

परमात्मा हम सबको जीवन देता है और परमात्मा से मिलने का तरीका भी एक ही है। परम सन्त संसार में हमें तोड़ने या लड़वाने के लिए नहीं आते। हर महात्मा ने अपनी बानी में यही कहा है कि आप लोग इकट्ठे होकर बैठें, परमात्मा की भक्ति करें।

जब तक सन्त-महात्मा संसार में रहते हैं हर मुल्क और हर समाज के लोग उनसे फायदा उठाते हैं। जब महात्मा संसार से चले जाते हैं तब हम अपनी बुद्धि के मुताबिक अपने फायदे के लिए उनके टीके बना लेते हैं उनके उपदेशों को अपनी पूर्ति के लिए ढाल लेते हैं। महात्मा सारे संसार के लिए आते हैं। हम उन्हें एक मुल्क या एक जिले में बंद करना चाहते हैं। इससे बढ़कर हम उनके साथ क्या बेइन्साफी करेंगे? यह सब हम अपने पेट या मान बड़ाई के लिए करते हैं।

जैसे सन्त संसार में आकर सबको गले लगाते हैं सबको एक जैसा उपदेश करते हैं हमें भी चाहिए कि हम भी इन लड़ाई-झगड़ों से ऊपर उठकर परमात्मा की भक्ति करें। जिस तरह परमात्मा सबको हवा, पानी, बारिश मुफ्त में देता है इसी तरह सन्त-महात्मा अपनी तालीम की कोई फीस नहीं लेते, वे मुफ्त में ही हमारी सेवा करते हैं अगर ऐसे महात्मा मिले तो हम उनसे फायदा उठाकर अपने जीवन को सफल बनाएं। इंसानी जामा बड़ा अमोलक है बार-बार हाथ नहीं आएगा।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''प्यारेयो! चौरासी लाख योनिआँ भुगतने के बाद इंसानी जामा मिलता है। इसे शराबों-कबाबों या दुनिया के खोटे कर्मों में खराब करके चले जाना अपने साथ बेइन्साफी करना हैं।'' स्वामी जी महाराज कहते हैंः

अपने जीव की दया पालो चौरासी का फेर बचा लो।

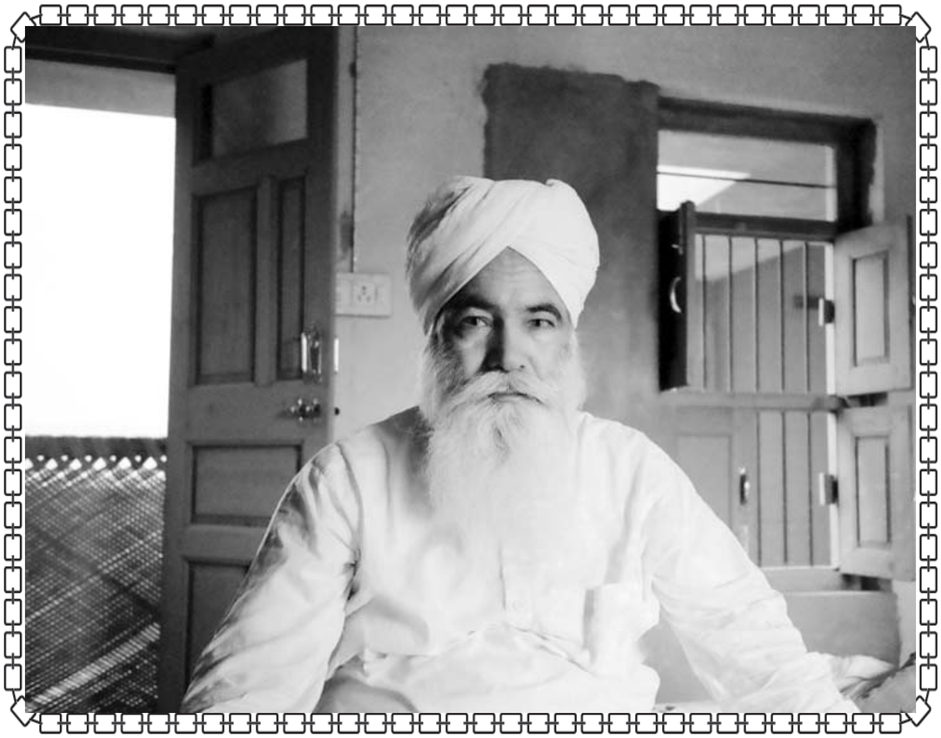

प्यारे बच्चों! चौरासी लाख योनिओं से बचने के लिए अपने ऊपर दया करें। जो अपने ऊपर दया करता है परमात्मा भी उस पर दया करता है। हमें भी चाहिए जो कुछ महात्मा चरनदास जी ने समझाया है उसके मुताबिक शब्द-नाम की कमाई करें। कभी भी भजन के चोर ने बनें। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

जो जो चोर भजन के प्राणी से से दुख सहें।
आलस नींद सतावे उनको नित नित भ्रम गहें।
काम क्रोध के धक्के खावें लोभ नदी में डूब मरें।।

भजन के चोरों को अनेको बलाएं चिपट जाती हैं। हमने भजन के चोर नहीं बनना, भजन करके अपने जीवन को सफल बनाना है।

☆☆☆

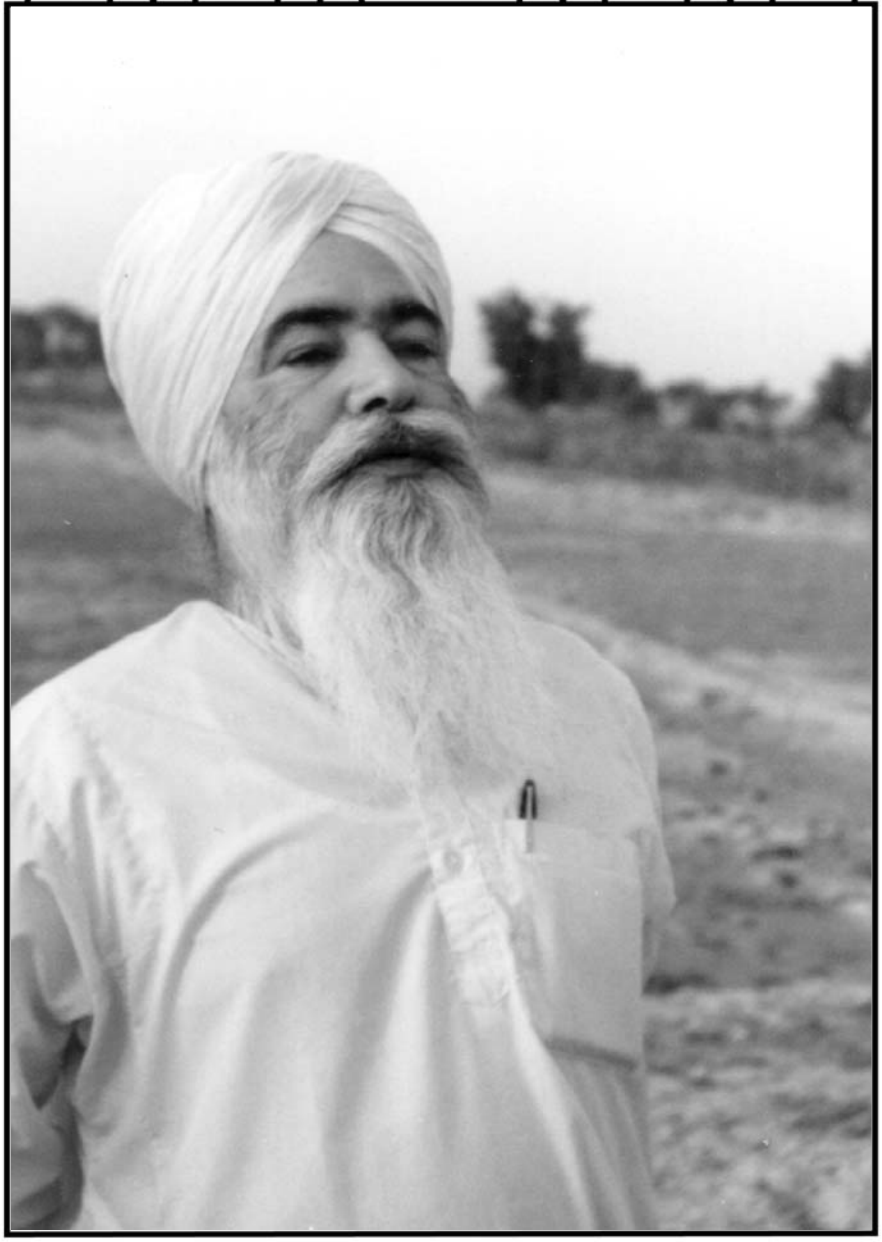

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

जिसकी हर समय कशिश बनी रहे प्रेमी उसी का रूप बन जाता है मालिक की विरह को छोड़कर सब विरह फिजूल हैं। जो लोग दुनिया के लिए रोते-बिलखते नजर आते हैं, वे जिस्मानियत से ही बँधे रहते हैं। उनका परमार्थ की तरफ आना मुश्किल हो जाता है। जो मन-माया में फँसा रहता है वह न मालिक की तरफ जाने के उपदेश को सुनता है और न ही मालिक से मिलना चाहता है। उसकी आँखों पर पट्टी बंध जाती है उसे कोई चीज़ अपने असली रंग में नजर नहीं आती।

मजनूं लैला के रंग में रंग गया था। उसका दीन-ईमान लैला ही बन गई थी। लैला जहाँ-जहाँ से गुजरी मजनूं उसके पैरों के निशानों पर सिजदे करते हुए जा रहा था। किसी ने मजनूं से कहा, ''तुझे खुदा मिलना चाहता है।'' मजनूं ने जवाब दिया, ''अगर खुदा मुझसे मिलना चाहता है तो वह लैला बनकर आ जाए!'' गुरु रामदास जी फरमाते हैं:

होर विरह सब धात है जब लग सहज प्रीत न होय।
ऐह मन माया मोहया वेखन सुनन न होय।

लैला-मजनूं जैसी **विरह** कभी किसी विरले बड़भागी को परमार्थ में ले आए। असली विरह तभी उपजती है जब भगवंत या उसके नर-रूप पूरे सतगुरु से **प्रेम** हो!

लाए विरह भगवंत संगे, होय मिल वैरागण राम।
चंदन चीर सुगंध रस, हौमे बिख त्यागन राम।

ऐसा सतगुरु ढूंढे जो 'नाम' का विरही शब्द का पारखी हो क्योंकि उसके बिना परमपद की प्राप्ति असंभव है। ऐसे गुरु पर हमारा सब कुछ ही कुर्बान है।

सतगुरु विरही नाम का जे मिले ते तन मन देयो।
जे पूर्व होवे लिखया ता अमृत सहज पिए ओह।

विरह की अवस्था सिर्फ शौंक वाली नहीं। विरह अपना एक अनोखा रस रखती है। विरही बहुत कष्ट होने पर भी इस अवस्था को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। जिसके अंदर सच्ची विरह जाग पड़ती है उसे लाख-लाख बधाईयां। कबीर साहब **विरह** की निशानियां फरमाते हैं, ''विरही वियोग में व्याकुल हो जाता है, दिनों-दिन पान के पत्ते की तरह पीला पड़ता जाता है।''

नाम वियोगी विकल तन ताहें न चीन्हे कोय।
तम्बोली के पान ज्यों दिन दिन पीला होय।

विरह की निशानी के बारे में मीरा बाई भी कहती हैं:

पाना जो पीली पड़ी रे लोक कहे पन्ड रोग।

चरनदास जी भी यही फरमाते हैं:

मुख पीरो सूखे अधर आँखे खरी उदास।
आह जो निकसे दुख भरी गहरे लेत उसांस।

मौलवी रूम साहब फरमाते हैं, ''अगर तू मुझे नहीं जानता तो तू रातों से पूछ! मेरे पीले चेहरे और सूखे हुए होठों से पूछ कि मेरी क्या हालत है?''

शम्स तबरेज साहब मौलवी रूम साहब को फरमाते हैं कि हे पुत्र! परमात्मा के आशिक की नौं निशानियां हैं। वह हौंके भरता रहता है, उसके ठंडे साँस निकलते हैं इस कारण उसका रंग पीला पड़ जाता है। वह मालिक से मिलाप करना चाहता है लेकिन यह उसके बस की बात नहीं। मालिक की याद आने पर आँखे रो पड़ती हैं लेकिन दिल में लगी ज्वाला को आँसुओं का पानी नहीं बुझा सकता। हर समय उसकी आँखें तर रहती हैं। वह कम खाता है कम सोता है; उसकी भूख और नींद हराम हो जाती है। **विरह** की आग हृदय में लगती है जिसका धुँआ प्रकट नहीं होता। यह आग जिसे लगती है वही जानता है:

घायल की गति घायल जाने अवर न जाने कोई।

यह आग बाहर नहीं लगती। इस अग्नि से आँसु-रूपी जल निकलता है। वह इसे बुझाने का यत्न करता है लेकिन विरही का पूर्ण इलाज तभी हो सकता है अगर वह आ जाए जिसकी **विरह** उसे सता रही है।

हृदय भीतर दोअ जले धुँआ न प्रकट होय।
जाके लागी सो लगे कह जिन लाई सोय।
तन भीतर मन मानया बाहर काहूँ न लाग।
ज्वाला ते थिर जल पया बुझी जलन्ती आग।

दादू साहब फरमाते हैं, ''विरहन अपना दुःख किसे बताए और किसके हाथ संदेश भेजे। रास्ता देख-देखकर विरहन के केश बिखर रहे हैं। जब तक प्रीतम नहीं मिलता सुख नहीं होता। ऐसी हालत में कैसे जीवित रहा जाए? जिसने मुझे घायल किया है वही मेरा दारू है। मैं अपने प्रीतम के एक क्षण के दर्शनों के लिए दीन-दुनिया, तन-मन और स्वर्ग-नर्क सब कुर्बान करने के लिए तैयार हूँ।''

दादू विरहन दो कासन कहे कासन दे संदेश।
पंथ निहारत पीव का विरहन पलटे केश।
न वो मिले न मैं सुखी कहो क्यों जीवन होय।
जिन मुझको घायल किया मेरा दारू सोय।
दीन दुनी सदके करूं टुक देखन को दीदार।
तन मन पी छिन छिन करूं भिस दोजक भी वार।

खुसरो साहब जी फरमाते हैं हे अंजान वैद्य! मेरे सिरहाने से उठ जा क्योंकि हृदय के दर्द का इलाज दीदार के बिना नहीं हो सकता। मालिक के बिछोड़े में सोज-गुदाज करना खास रस रखता है। जो लोग मन के शिकार हैं और खाने-पीने में लगे हुए हैं उन्हें अंधो की तरह उस रोने की क्या खबर हो सकती है? ऐसा सोज-गुदाज में रोना सदा की खुशी का भागी बनाता है। जिस इंसान को यह नसीब है वह सचमुच मुबारक बन्दा होता है। गुरबानी विरह के अनेकों फल बताती है। कबीर साहब फरमाते हैंः

विरह आया दर्द से कड़वा लागा काम।
काया लागी काल होय मीठा लागा नाम।

विरह के आने पर तन व उसके सब रस कड़वे हो जाते हैं। केवल मालिक का नाम ही मीठा लगता है और सब रस फीके पड़ जाते हैं।

विरह बेदी सब बसे भाई अधक रही हर नाय।

विरह से प्रीतम का प्रेम और सम्मान बढ़ता है। मालिक प्रेम-मूर्त है। **प्रेम** जितना ज्यादा होता है उतना ही प्रेमी जिज्ञासु प्रभु के नजदीक होता जाता है। जिस जिस्म में प्रीतम का पवित्र वास हो चुका होता है उसके अंदर प्रीतम की कद्र बढ़ जाती है। शेख फरीद साहब इस ख्याल को सुंदर तरीके से बयान करते हैंः

कागा चुंड न पिंजरे वसे तो उडत जाहे।
जित पिंजरे मेरा सोह वसे माँस न तिधू खाहे।

ऐ कागा! उस पिंजरे से उड़ जा जिस पिंजरे में मेरा प्रीतम बसता है, उसका माँस न खा। कबीर साहब फरमाते हैः

साईं सेती जल गई माँस न रहिए देह।
साईं जब लग सेविए ऐह तन होए न खेह।

गुरु दर्शन, नाम और मालिक के प्रकट न होने के कारण **विरह** की उत्पत्ति होती है।

मेरा मन लोचै गुरु दरसन ताईं। बिलप करे चात्रिक की न्याईं।
त्रिखा न उतरे सांत न आवै। बिन दरसन संत प्यारे जिओ।
हौं घोली जीउ घोल घुमाई। गुरु दरसन संत प्यारे जिओ।
तेरा मुख सुहावा जिओ सहज धुन बाणी। चिर होआ देखे सारिंग पाणी।
धन सो देस जहाँ तूं वसया मेरे सजण मीत मुरारे जिओ।
हौं घोली हौं घोल घुमाई गुरु सजण मीत मुरारे जिओ।
इक घड़ी न मिलते तां कलजुग होता। हुण कद मिलिऐ प्रिअ तुध भगवंता।
मोहे रैण न विहावै नींद न आवै। बिन देखे गुर दरबारे जिओ।
हौं घोली जीउ घोल घुमाई। तिस सच्चे गुर दरबारे जिओ।

विरही की अवस्था

मोरी चुण चुण लाया भैंणे सावन आया।
तेरे मुंद कटारे जेवणा तिन लोभी लोभ लभाया।

तेरे दर्शन विठो खनियां वईयां तेरे नाम विटो कुर्बानों।
जां तू तामें माण किया है तुध बिन केहा मेरा माणो।

चूड़ा भन्न पलंग स्यों मूंदे संण बाहीं संण बाँहा।
ऐते वेश करेन्दिए मूंदे सौरा तो अवराहां।
ना मनी यार ना चूड़ियां ना से वंग्णिहां।
जो से कंठ ना लगियां जलन से बाहंणियां।

सब सईंया स्यों रावण गईयां हों दादी के दर जावां।
अमाली हों खरी सुसज्जी तें से एक ना भावां।
माठ गोदाई पटियां भरियां मांग सिंधूरे।
अग्गे अग्गे न मनिए मरो वसूर वसूरे।

मैं रोवंदी सब जग रुन्ना रुनणे वनू पखेरू।
इक न रुन्ना मेरे तन का विरहा जिन्हूं पिरु विछोड़ी।

सुपना आया भी गया मैं जल भरया रोय।
आए ना सका तुझ कन प्यारे भेज ना सका कोय।
ओ सोभागी निंदणिए मत सो देखा सोय।
तैं साहब की बात च आखे कहो नानक क्या दीजे।
सीस वड्डे कर बेसन दीजे बिन सिर सेव कीरजे।
क्यों न मरीजे जीड न दीजे ज्यों स्यों भया वडाना।

विछोड़ा सुणे दुख बिन डिट्ठे मरयोध।
बाज प्यारे आपणे बिरही न धी रोध।

मुंद रैण दुहेणिय जी नींद न आवे।
सातन दुग्लिए से पिर कहावे।

फरीदा चिन्त कठोला वाड़ दुख विरह विछावंण लेख।
ऐयो हमारा जीवड़ा तू साहेब सच्चे वेख।

विरही प्रीतम से मिलने के लिए मिन्नतें करता है।

मैं हर विरही हर नाम है कोई आण मिलावे माए।
तिस आगे मैं जोदड़ी मेरा प्रीतम दे मिलाए।

मालिक की विरह को छोड़कर बाकी सब विरह फिजूल हैं।

होर विरह सब धात है जब लग साहब प्रीत न होय।
ऐह मन माया मोहया वेखन सुनन न होय।

कच्ची विरह से सच्ची प्रीत उत्पन्न नहीं होती।

रत्ते से जे मुख न मुड़न जिन्नी स्यातां साईं।
झण झण पवन्दे कच्चे विरही जिन्हां कार न आई।

विरह के लक्षण

विरह के बिना जिज्ञासु का शरीर निकम्मा है।

जो सिर साईं न निवे सो सिर दीजे डार।
नानक जिस पिंजर में विरह नहीं सो पिंजर ले जार।
जोबन जान्दे न डरा जे से प्रीत न जाए।
फरीदा कीती जोबन प्रीत बिन सुख गए कुम्लाए।

प्रीतम के बिना विरही का जीवन मरने के समान है। विरही को प्रीतम के सिवाय कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

चात्रिक जल बिन पिरो पिरो टेरे विलप करे बिललाई।
धन हर घोर दसो दिस बरसे बिन जल प्यास न जाई।

कबीर विरह भुयंगम मन बसे मनत न माने कोय।
राम वियोगी ना जिए जिए तो बौरा होय।

कबीर अंबर घन हर छाया बरफ भरे सर ताल।
चात्रिक ज्यों तरसत रहे तिन को कौन हबाल।

फरीदा चिन्त खटोला वाण दुख विरह बिछावन लेप।
ऐहो हमारा जीवणा तू साहेब सच्चे वेख।

जिस प्यारे से न्यों तिस अग्गे मर चलिए।
ध्रिग जीवण संसार ताके पाछे जीवणा।

पिर परदेसी जे थिया धन वांडी झुरे।
ज्यों जल थोड़ा माछली करन भुलाव परे।

बिछोड़ा सुने डुख बिन डुठे मेरी ओध।
बाज प्यारे आपणे बिरही न धी रोध।

विरह से बेसब्री और अशान्ति होती है।

अज न सुत्ती कन्त स्यों अंग मुड़े मुड़ जाए।
जाए पुछा दोहागिणी तुम क्यों रैण बिहाए।

विरह का हाल

विरह से सब बुरे संस्कार धुल जाते हैं और मालिक के साथ लिव लग जाती है।

धोबी धोवे विरह विराता हर चरण मेरा मन राता।

विरह से प्रीतम का प्रेम बढ़ जाता है, सच का वास हो जाता है।

बईयर बोले मीठली भाई साच कहे विरभाए।
विरह बेदी सब बसे भाई अधक रही हरनाए।

विरह मालिक या सतगुरु के लिए होनी चाहिए।

लाए विरह भगवंत संग होय मिल बैरागण राम।
चंदन चीर सुगंध रसे हौमे विख त्यागन राम।

ऐसा सतगुरु तलाश करो जो 'नाम' का विरही हो।

सतगुरु विरही नाम का जे मिले तो तन मन देओ।
जे पूर्व होवे लिखया ते अमृत सहज पीवे ओह।

जब प्रबल **प्रेम** जाग उठता है तो सांसारिक इच्छाएं मिट जाती हैं, विषयों का अभाव हो जाता है और लोक-परलोक के किसी पदार्थ में रूचि नहीं रहती। इनसे चित्त उपराम हो जाता है। दुनिया के पदार्थों से हटकर अपने सृजनहार करतार के वियोग में विलाप करने और उसके **प्रेम** में जाग उठने का नाम वैराग्य है।

मन वैराग भया दर्शन हर देखन के चाव।

ऐसी अवस्था में दुनिया का मोह उड़ जाता है, संसार से उपराम होकर मालिक के प्यारों के पीछे-पीछे लगने के लिए मन लोचता है। वैरागी सब गैरजरूरी चीज़ो का त्याग करके सार-तत्त्व के मालिक को ग्रहण करता है और जिस्मानी चीजों को गुजारे के लिए इस्तेमाल करता है। रूह को आधार देने वाली चीजों को भोगना ही सच्चा वैराग्य है।

वैरागी दुनिया में रहता हुआ दुनिया से उपराम रहता है। उसे दुनिया को छोड़ने की जरूरत नहीं, वह दुनिया में रहते हुए दुनिया की सब चीजों में मालिक का जलवा देखता है। वैराग को धारण करना अपनी आत्मा पर अंकुश करना है। जो लोग बिना सोचे समझे दुनिया से वैराग करते हैं वे शान्ति नहीं पाते। ऐसे लोग फिर दुनिया में भटकते हुए देखे जाते हैं।

इंसान को चाहिए कि वह दुनिया की चीज़ो को गुजारे के लिए ही इस्तेमाल करे। अपनी आत्मा को 'नाम' और गुरु के साथ जोड़कर रखे। गुरु का प्यार दिनों-दिन अंदर बढ़ाता जाए, जैसे-जैसे अंदर प्यार बढ़ता जाएगा वैसे-वैसे बाहर दुनिया का प्यार कम होता जाएगा। वैराग और त्याग में फर्क है। वैरागी त्याग का मोहताज नहीं; वह दुनिया में रहते हुए भी वैरागी हो सकता है। त्यागी पुरुष वैराग की दौलत से खाली रह सकता है। परमार्थ की प्राप्ति के लिए वैराग की बहुत जरूरत है। सतगुरु के मिलाप व गुरु भक्ति के प्रताप से शिष्य सहज ही सच्चे वैराग को धारण करने वाला बन जाता है।

प्रेम की तारीफ लफ्जों से नहीं हो सकती। यह वह नाजुक जज्बा है जिसे सच्चा प्रेमी ही महसूस कर सकता है। जुबान को यह ताकत नहीं कि इसे लफ्जों में अदा कर सके। **प्रेम** असल में मालिक का दूसरा रूप है। जिस तरह परमात्मा की तारीफ लफ्जों की बन्दिश में नहीं लाई जा सकती इसी तरह **प्रेम** की तारीफ भी लिखकर या बोलकर नहीं की जा सकती।

........शेष अगले अंक में